प्रश्नः

''भविष्यवक्ताओं ने कलीसिया के बारे में क्या कहा?''

उत्तरः

जहां तक हम जानते हैं, पुराने नियम के किसी भी भविष्यवक्ता ने कभी ''कलीसिया'' शब्द का इस्तेमाल नहीं किया।[1] न ही यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने, लेकिन यूहन्ना और भविष्यवक्ताओं ने कलीसिया की बात अवश्य की। पुराने नियम और यूहन्ना की अधिकतर भविष्यवाणियां नये नियम की कलीसिया पर समाप्त होती थीं। इसे ग्रहण करने के लिए तैयार लोगों के लिए, नये नियम की कलीसिया ''सुधार'' का वही समय है ''जिसकी चर्चा परमेश्वर ने अपने पवित्र भविष्यवक्ताओं के मुख से की है, जो जगत की उत्पत्ति से होते आए हैं'' (प्रेरितों 3:21)।

प्रेरितों 3 अध्याय में पतरस ने जिसे ''सुधार'' कहा, वह बाबुल की दासता के बाद यहूदियों के अपने देश वापस जाने की बहाली नहीं थी। वह सुधार दासता के सत्तर वर्षों के बाद होना था (यिर्मयाह 25:11) और 606-536 ई. पू. में ऐसा ही हुआ था (देखिए एज्रा 1:2)।

इसके अतिरिक्त, पतरस यह नहीं कह रहा था कि कलीसिया सुधार के समय तक रहेगी। कलीसिया (अर्थात उसका राज्य) पिता को सौंप दिए जाने पर (1 कुरिन्थियों 15:24) तो किसी प्रकार का सुधार या बहाली नहीं होगी। इसके विपरीत आकाश और पृथ्वी जलकर नष्ट हो जाएंगे (2 पतरस 3:10, 11; प्रकाशितवाक्य 21:1), न कि उनमें कोई सुधार होगा और सब कुछ ''नया'' होगा (प्रकाशितवाक्य 21:5)।

30 ईस्वी से संसार के अंत कलीसिया तक सुधार का समय पूरा होने तक नहीं रहेगी। सुधार तो कलीसिया की स्थापना के समय से ही चल रहा है, और अब भी चालू है, और यीशु के आने तक चलता रहेगा। यूहन्ना का काम सुधार करना नहीं था। एलिय्याह की आत्मा में उसने ''पितरों का मन लड़के बालों की ओर फेरकर'' और आज्ञा न मानने वालों का धर्म की ओर

फेरकर सब बातों का सुधार किया (मत्ती 17:11-13; लूका 1:17)। इसी प्रकार, अपनी कलीसिया के द्वारा यीशु का काम लोगों को अंधेरे से ज्योति की ओर और शैतान के राज्य से परमेश्वर की ओर फेरकर सुधार करना है (प्रेरितों 26:18)। प्रेरितों 3:21 में पतरस ने जिसे ''सुधार का समय'' किसी प्रकार का सांसारिक नहीं बल्कि आत्मिक सुधार है। यह सुधार सुसमाचार सुनाने (रोमियों 1:16) से बुलाए हुए लोगों के ''कलीसिया'' के रूप में समूह बन जाने से होता है। ''सुधार के समय'' के पूरा होने तक यीशु स्वर्ग में रहेगा। सचमुच, ''सैमूएल से लेकर उसके बाद वालों तक जितने भविष्यवक्ताओं ने बातें कहीं उन सब ने इन दिनों का संदेश दिया है'' (प्रेरितों 3:24)। 30 ईस्वी में पतरस के संदेश में ''इन दिनों'' निश्चय ही मसीह के दोबारा आने के बाद के समय को नहीं कहा गया था, क्योंकि तब तो कोई दिन होगा ही नहीं।

30 ईस्वी में पतरस द्वारा दी गई खुशी की खबर यह थी कि सब मसीही लोग, ''उस वाचा के भागी हैं जो परमेश्वर ने तुम्हारे बापदादों से बांधी।'' इब्राहीम को परमेश्वर की यह प्रतिज्ञा थी कि उसके वंश से पृथ्वी के सब घराने आशीष पाएंगे (प्रेरितों 3:25)। अटल वचन में दृढ़ करने वाला अनुभव है। भविष्यवाणी की उन बातों पर विचार करने से विश्वास मजबूत होता है जिसके आधार पर पतरस ने प्रचार किया था।

उत्पत्ति की पुस्तक में भविष्यवाणियां

सुसमाचार की पहली घोषणा

प्रोटेवेंजलियुम अर्थात सुसमाचार की पहली घोषणा, अदन की वाटिका में ही की गई थी। उत्पत्ति 3:15 में परमेश्वर ने कहा था कि स्त्री की संतान अर्थात मसीह (मत्ती 12:29) और मसीही लोग (रोमियों 16:20) इब्लीस की संतान अर्थात शैतान पर विजय पाएंगे (इब्रानियों 2:14; 1 यहून्ना 3:8)। उत्पत्ति 3:15 में व्यक्त की गई आशा ने सदियों से बहुत से लोगों को ढाढ़स दिया है।

इब्राहीम से प्रतिज्ञाएं

स्त्री के आत्मिक वंशों में (कैन से नहीं, बल्कि सेथ से), परमेश्वर ने इब्राहीम में अपने अनन्त उद्देश्य को बढ़ाना ही उचित समझा (उत्पत्ति 12:1-3)। इब्राहीम सच्चे परमेश्वर में विश्वास कैसे करने लगा, इसके बारे में विस्तार से नहीं बताया गया है। उसका पिता (तेरह) एक मूर्तिपूजक था (यहोशू 24:2) परन्तु उसका एक पूर्वज शेम परमेश्वर की उपासना करता था (उत्पत्ति 9:26)। इब्राहीम के आरम्भिक 150 वर्षों तक शेम जीवित था, इसलिए उसने अवश्य ही निजी तौर पर इब्राहीम के मन में विश्वास पैदा किया होगा। हर हाल में, परमेश्वर के प्रति इब्राहीम का समर्पण इतना अधिक था कि परमेश्वर ने उसे प्रतिज्ञाओं का मूल स्रोत बना दिया जो केवल स्वर्ग में ही सम्पूर्ण होंगी (मत्ती 8:11)। इब्राहीम के वंश के द्वारा (उत्पत्ति 22:18) जो कि मसीह ही होना था, लगभग 18 सदियों बाद (गलातियों

3:16) पृथ्वी के सारे घरानों को आशीष मिलनी थी (उत्पत्ति 12:3)। आज यहूदी हों या अन्यजाति, यदि वे मसीह में हैं तो आत्मिक रूप में प्रतिज्ञा के अनुसार वे इब्राहीम की संतान और वारिस हैं (गलातियों 3:29)।

यहूदा को प्रतिज्ञा

स्वर्ग की योजनाओं के अनुरूप, यह भविष्यवाणी की गई थी कि इब्राहीम का एक परपोता, यहूदा मसीह का पूर्वज बनेगा। भविष्यवाणी में मसीह को शीलो (''शांति का संदेशवाहक'') और राजा (राज्यभार वहन करने वाला और व्यवस्था देने वाला) के रूप में वर्णित किया गया था: ''जब तक शीलो न आए तब तक न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा, न उसके वंश से व्यवस्था देने वाला अलग होगा; और राज्य-राज्य के लोग उसके अधीन हो जाएंगे'' (उत्पत्ति 49:10)। शीलो के अधीन होने वाले ''लोग'' यीशु के बुलाए हुओं के अतिरिक्त और नहीं हैं (मत्ती 16:18, 19)।

''शमूएल और उसके उत्तराधिकारियों'' द्वारा भविष्यवाणियां

शमूएल द्वारा लिखी गई भविष्यवाणी

प्रेरितों 3:24 में पतरस ने विशेष तौर पर शमूएल को वह भविष्यवक्ता बताया जिसने नये नियम की कलीसिया के ''इन दिनों'' की भविष्यवाणी की थी। 2 शमूएल 7:16 में कलीसिया को एक घराने और राज्य के दृष्टांत के रूप में देखा गया था। इस घराने का आना निश्चित था, और इसका समय अनन्तकाल तक था। भविष्यवाणी की पृष्ठभूमि के प्रकाश में, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि नया नियम कलीसिया के वर्णन के लिए घराने और राज्य दोनों का ही इस्तेमाल करता है (1 तीमुथियुस 3:15; मत्ती 16:19)।

दाऊद द्वारा भविष्यवाणी

शमूएल ने दाऊद का इस्राएल की शाही पंक्ति के मूल के रूप में अभिषेक किया। परमेश्वर ने दाऊद को नये नियम के बुलाए हुए लोगों के बारे में बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू की भविष्यवाणी करने के लिए नबी बनाया था (प्रेरितों 2:30): ''तेरी प्रजा के लोग तेरे पराक्रम के दिन स्वेच्छाबलि बनते हैं; तेरे जवान लोग पवित्रता से ...'' (भजन 110:3)। पश्चाताप न करने वाली जातियों को, न्याय के दिन मसीहा के क्रोध के डण्डे को झेलना पड़ेगा (भजन 2:9; प्रकाशितवाक्य 19:15)। उसके अपने लोग अर्थात बुलाया हुआ समूह पवित्रता और सुन्दरता में जीवन बिताते हुए स्वेच्छा से उसकी सेवा करेंगे।

यशायाह द्वारा भविष्यवाणियां

पिछले किसी भी भविष्यवक्ता से अधिक स्पष्ट रूप में, यशायाह आठ शताब्दियां पहले ही प्रभु की कलीसिया को देख पाया था। उसे नये नियम की इस संस्था को ''यहोवा के भवन

का पर्वत'' (यशायाह 2:2) नाम देने की आज्ञा मिली थी, जिसमें सब जातियों के लोगों ने आना था। फिर, हमें यह स्वाभाविक लगता है कि नये नियम के लेखकों ने भविष्यवाणी की भाषा में कलीसिया को एक पर्वत और एक घराने के रूप में वर्णित किया। इब्रानियों 12:22 कहता है, ''तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास'' आए हो (इब्रानियों 3:6 भी देखिए)।

यशायाह को यह भविष्यवाणी करने का अधिकार मिला था कि कलीसिया का आरम्भ यरूशलेम से होगा (यशायाह 2:3)। इसी बात के अनुसार, यीशु ने अपने प्रेरितों को आज्ञा दी थी कि जब तक उन्हें उसके नाम में प्रचार करने की सामर्थ न मिले तब तक वे यरूशलेम में ही ठहरे रहें (लूका 24:46-49)। इसी प्रकार इस भविष्यवाणी को पूरा करते हुए, आकाश के नीचे की हर जाति के लोगों ने (प्रेरितों 2:5) प्रेरितों से वह संदेश सुना जिसे सुनकर लोग कलीसिया के सदस्य बनते हैं, जिसे हम मसीह के प्रभु होने का शुभ समाचार कहते हैं (प्रेरितों 2:36)। परिणामस्वरूप तीन हज़ार लोगों को एक ही देह में कलीसिया में बपतिस्मा दिया गया था (प्रेरितों 2:41; देखिए 1 कुरिन्थियों 12:13; कुलुस्सियों 1:18)। कलीसिया के उन सदस्यों पर ''दाऊद की अटल करुणा की वाचा'' बरसाई गई थी (यशायाह 55:3)। उन लोगों को और आज के सब मसीही लोगों को बड़ी आशिषें मिली हैं। प्राचीन समय से ही, लोगों ने ऐसी आशिषों के बारे में न तो सुना और न ही देखा और न कभी कल्पना की थी (यशायाह 64:4; देखिए 1 कुरिन्थियों 2:9), परन्तु आज वे आशिषें सब मसीही लोगों के लिए एक वास्तविकता बन चुकी हैं।

यिर्मयाह द्वारा भविष्यवाणी

एक अलग रूपक का इस्तेमाल करते हुए, यिर्मयाह ने भी नये नियम की कलीसिया के ''इन दिनों'' की भविष्यवाणी की। पवित्र आत्मा ने उसे एक रूपक की प्रेरणा दी: शारीरिक इस्राएल और यहूदा को मिसर से निकलने के समय परमेश्वर की ओर से एक वाचा मिली। यह वाचा पत्थर और पैपिरी (papyri) पर लिखी गई थी, परन्तु आत्मिक इस्राएल और यहूदा को हृदयों तथा मनों पर अन्दर लिखी गई एक *नई* वाचा मिलनी थी (यिर्मयाह 31:31-34; देखिए इब्रानियों 8:6-13)। इसके पूर्ण रूप में पूरा होने के परिणामस्वरूप हृदय की मांस की पट्टियों पर प्रेरितों के द्वारा पवित्र आत्मा से लिखी गई परमेश्वर की कलीसिया बनी थी। 2 कुरिन्थियों 3:3 में पौलुस ने मसीही लोगों को बताया, ''कि तुम मसीह की पत्री हो, जिस को हम ने सेवकों की नाईं लिखा; और जो सियाही से नहीं, परन्तु जीवते परमेश्वर के आत्मा से पत्थर की पट्टियों पर नहीं, परन्तु हृदय की मांस रूपी पट्टियों पर लिखी है।''

दानिय्येल द्वारा भविष्यवाणी

परमेश्वर ने दानिय्येल नामक एक बन्दी को नबी के रूप में कलीसिया की स्थापना से छह शताब्दियां पहले दिखाने के लिए इस्तेमाल किया। दानिय्येल ने रोमी राजाओं के समय

को केन्द्रबिन्दु बनाकर बड़े राज्यों के उदय तथा पतन के सम्बन्ध में बताया। उसे यह भविष्यवाणी करने की सामर्थ मिली थी कि इन राजाओं के उत्कर्ष के दौरान, आकाश का परमेश्वर एक राज्य खड़ा करेगा जो मनुष्य के हाथों से बनाया हुआ नहीं बल्कि अनन्तकाल तक रहने वाला होगा (दानिय्येल 2:44; इब्रानियों 12:28)। उस राज्य के नागरिकों से नये नियम की कलीसिया बनती (कुलुस्सियों 1:12, 13)।

यूहन्ना द्वारा भविष्यवाणी

30 ईस्वी में कलीसिया की स्थापना से तुरन्त पहले, परमेश्वर ने यूहन्ना नामक एक भविष्यवक्ता को खड़ा किया। उसका काम लोगों को मन फिराने, आने वाले मसीहा में विश्वास करने और अपने पापों की क्षमा के लिए जल में डुबकी लगाने के लिए कहकर (मत्ती 3:2; मरकुस 1:4) प्रभु के लिए उन्हें तैयार करना था (लूका 1:17)। कोई कह सकता है कि यूहन्ना के समय में कलीसिया का अस्तित्व (तैयारी में) था और लोग इसमें आ रहे थे (लूका 16:16)। परन्तु वास्तव में, यूहन्ना के समय में कलीसिया का अस्तित्व नहीं था; उसे स्वयं भी इसका सदस्य बनने का सौभाग्य नहीं मिला था (मत्ती 11:11)। जैसे दाऊद ने वे पत्थर तैयार किए थे जिनका बाद में सुलैमान ने मन्दिर बनाने के लिए इस्तेमाल किया, वैसे ही यूहन्ना ने आत्मिक पत्थर तैयार किए जिन्हें मसीह ने अपने मन्दिर अर्थात कलीसिया में लगा दिया।[2]

समय का पूरा होना

व्यवस्था और भविष्यवक्ता यूहन्ना के समय तक प्रभावी थे (मत्ती 11:13) और उसके बाद तो चरम अर्थात योजना करने के युग का पूरा होना आ गया जिसमें परमेश्वर के राज्य, उसके घराने, उसके पहाड़, उसके लोगों और उसकी कलीसिया की नींव रखी गई! शमूएल से लेकर मलाकी तक सब नबियों की तरह पुराने नियम से हम भी हैरान होते हैं जिसमें कलीसिया के आने को विशेष रूप में दिखाया गया है! परमेश्वर के अनन्त उद्देश्य के अनुसार (इफिसियों 3:11) ''जब समय पूरा हुआ'' (गलातियों 4:4) तो अगज्य ज्ञान के भंडार की गहरी बातें मनुष्यों पर प्रकट कर दी गईं!

सारांश

प्रभु के मन को किसने पाया है, या कौन है जो उसे सलाह दे सकता है? (देखिए रोमियों 11:34.) अपने प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम सब उसके, उसके द्वारा और उसके लिए हैं!

पाद टिप्पणियां

[1]अंग्रेज़ी शब्द ''Church'' मध्य अंग्रेज़ी शब्द *Chirche* से लिया गया है, जो प्राचीन अंग्रेज़ी भाषा के *Cyrice* से, और वह जर्मन भाषा के *Kirche* से, वह यूनानी के शब्द *Cyriacon* से लिया गया है जिसका अर्थ है ''से सम्बन्ध रखने वाला।'' नये नियम में *cyriacon* शब्द केवल दो बार ही आता है: पहली बार, प्रभु भोज के सम्बन्ध में (1 कुरिन्थियों 11:20) और दूसरी बार प्रभु के दिन के सम्बन्ध में (प्रकाशितवाक्य 1:10)। बाद में इस शब्द का इस्तेमाल परमेश्वर के घर के सम्बन्ध में होने लगा और इसलिए अंग्रेज़ी शब्द ''चर्च'' का अर्थ ''परमेश्वर का घर'' है। अपने लोगों अर्थात उनके लिए जिनकी भविष्यवाणी भविष्यवक्ताओं और यूहन्ना ने की थी, यीशु ने *एकलेसिया* शब्द का इस्तेमाल किया जिसका अर्थ है ''बुलाए हुए।'' इसलिए सारी पृथ्वी के लोग जिन्होंने यीशु द्वारा बुलाए जाने की पुकार को मानकर अशुद्ध वस्तुओं से हर बात में उसके प्रभुत्व को मान लिया है, वे उसकी *एकलेसिया,* उसके बुलाए हुए लोगों अर्थात उसकी कलीसिया या चर्च हैं।

[2]कहीं भी यह नहीं मिलता कि *यूहन्ना* के हाथों बपतिस्मा लेने वाले को दोबारा बपतिस्मा लेने की आवश्यकता पड़ी हो। ऐसी शर्त का अर्थ यह होगा कि यूहन्ना ने अपने उस काम को जो उसे प्रभु के लिए लोगों को तैयार करने का मिला था, सही ढंग से नहीं किया (लूका 1:17)। ज़्योंकि, यदि इसकी आवश्यकता होती, तो पिन्तेकुस्त के दिन पतरस भी दूसरी बार बपतिस्मा लेने के लिए तैयार होता। यह सत्य है कि इफिसुस में चौबीस वर्ष बाद, कोई (शायद अपुल्लोस) अभी भी मसीहा के आने वाले क्रूसारोहण के सम्बन्ध में यूहन्ना का तैयारी का संदेश सुना रहा था और उसने कम से कम बारह लोगों को बपतिस्मा भी दे दिया था (प्रेरितों 19:1-4)। इन लोगों ने 54 ईस्वी में यह न जानते हुए कि मसीहा तो आ चुका था और वह 30 ईस्वी में उनके लिए मर गया था, अज्ञानता में बपतिस्मा लिया था। परिणामस्वरूप सच्चाई जान लेने पर उसके लिए ज़रूरी था कि वे फिर से बपतिस्मा लें। ऐसा कोई संकेत नहीं है कि 30 ईस्वी से पहले बपतिस्मा लेने वाले किसी व्यक्ति ने दोबारा कभी बपतिस्मा लिया हो।